विजयनगर साम्राज्य का कला एवं साहित्य में योगदान

दक्षिण भारत की कला एवं वास्तुकला पूर्व-मुस्लिम काल में अपने गौरव के चरमोत्कर्ष पर पहुँच गयी थी, परन्तु अलाउद्दीन की सेना द्वारा इसे भारी क्षति पहुँचायी गयी। इसलिए जब बुक्का प्रथम सत्ता में आया, तो उसने सम्पूर्ण भारत वर्ष के विद्वानों एवं कलाकारों को विजयनगर में आमंत्रित किया। स्थापत्य में द्रविड़ शैली के विकास में विजयनगर का विशेष योगदान माना जाता है। वस्तुतः इस काल में बड़े एवं भव्य प्रकार के गोपुरम निर्मित किये गए। इतना ही नहीं, द्रविड़ कला शैली में विजयनगर का निम्नलिखित योगदान देखने को मिलता है-प्रथम, मंडप के साथ-साथ कल्याण मंडप का निर्माण। वस्तुतः कल्याण मंडप में देवताओं और देवियों के विवाह का आयोजन किया जाता था। फिर इसकी दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता है अलंकृत स्तम्भों का प्रयोग, इसमें सबसे सुगोचर तत्व है दो टाँगों पर खड़ा घोड़ा। इस काल के कुछ प्रसिद्ध मंदिरों में हम कृष्णदेव राय द्वारा निर्मित हजारा एवं विठ्ठल स्वामी मंदिर की गणना कर सकते हैं।

हजारा राम मंदिर

हालांकि विजयनगर की कला को द्रविड़ कला कहा गया है, परन्तु इसकी वास्तुकला अलग प्रकार की है जिसमें सफलता के साथ पेचीदी वस्तुएँ प्रयोग की गयी हैं। आंशिक रूप से नष्ट हुए मंदिरों की मरम्मत की गयी एवं बढ़ाया गया तथा आकार प्रदान किया गया। पुराने मंदिरों के ध्वंसावशेषों के ऊपर नये मंदिरों की व्यापक योजना बनायी गयी एवं उनका निर्माण किया गया।

नव निर्मित मंदिर आकार-प्रकार में वृहद् थे जिसमें एक साथ सैकड़ों-हजारों भक्तगण आ सकते थे। मंदिर वास्तुकला में कई नये तत्व जोड़े गये-कल्याण मण्डप या अलंकृत स्तंभ, बरामदे के बायें किनारे पर मण्डप का निर्माण आदि। गर्भगृह और गोपुरम पूर्ववत् बने रहे। अम्मन धर्मस्थानों का निर्माण सहायक मंदिरों के रूप में किया गया। कल्याण मण्डप इसलिए महत्वपूर्ण था क्योंकि उस पर विभिन्न देवताओं की आकृतियाँ बनायी गयी, साथ ही विशेष उत्सवों की दृष्टि से भी यह महत्वपूर्ण था।

स्तंभों का प्रचुरता से प्रयोग किया गया, ताकि निर्माणों का आकार बढ़ाया जा सके और वृहद सभागारों का निर्माण संभव हो। वास्तुकलात्मक निर्माण अलंकृत हुआ तथा प्राचीन भारतीय मूर्तिकला का आकार देखने को मिला। एक हजार स्तंभ वाले मण्डपों का निर्माण विजयनगर मंदिर कला का आदर्श स्वरूप था। स्तंभों का निर्माण इस प्रकार किया गया कि वे आलंकारिक दिखते थे। मूर्तियों के पट्ट विभिन्न पौराणिक कथानकों को दर्शाते थे। भव्य आकारों एवं अलंकरण वाले गोपुरम मंदिरों में प्रवेश के लिए बड़े द्वारों का निर्माण करते थे। धीरे-धीरे इनका आकार एवं संख्या बढ़ती गयी। यह रोचक तथ्य है कि धर्म-निरपेक्ष भवनों में इण्डो-इस्लामिक विशेषताएँ पायी गयी हैं-गुम्बद एवं कमल का निर्माण।

पूर्व के भव्य विजयनगर के ध्वंसावशेषों को अभी भी देखा जा सकता है जिनमें सौंदर्य एवं कलात्मक तत्व अभी भी विद्यमान है-विट्ठल एवं हजारा राम मंदिर इसके उदाहरण हैं। ऊँचे चबूतरे, बड़े सभागार एवं स्तंभ इसमें देखे जा सकते हैं।

आधुनिक भारत के अधिकांश प्रसिद्ध मंदिर तुंगभद्रा के दक्षिण में अवस्थित हैं। इनका निर्माण विजयनगर काल में ही हुआ है। कुम्भकोणम, काँचीपुरम, श्रीरंगम, वेल्लोर आदि ऐतिहासिक मंदिरों से भरे पड़े हैं।

विजयनगर वास्तुकला का अंतिम चरण मदुरा शैली के रूप में साम्राज्य के पतन के बाद भी फलता-फूलता रहा। इसके उदाहरण मदुरा, रामेश्वरम्, श्रीरंगम, तिरूवल्लूर, चिदम्बरम, तिन्नावेली एवं सुदूर दक्षिण के कई स्थानों में देखे जा सकते है।

विजयनगर के दरबार में उच्चकोटि के कई चित्रकार भी थे। हालांकि चित्रकला धीरे-धीरे विलुप्त होती चली गयी। पुर्तगाली लेखकों एवं अब्दुर रज्जाक ने विजयनगर सम्राट की सेवा में रहने वाले चित्रकारों की उच्च स्तर की चर्चा की है।

फिर **चित्रकला** के रूप में लिपाक्षी चित्रकला का विकास हुआ। यह चित्रकला की एक विशिष्ट शैली थी तथा इसमें विषय रामायण एवं महाभारत से लिए गये। इस काल में **संगीत कला** का विकास भी देखने को मिलता है। कृष्णदेव राय एवं रामराय अच्छे संगीतज्ञ थे। फिर इस काल में नृत्य और संगीत को मिलाकर एक नवीन शैली का विकास हुआ, जिसे यक्षिणी (यक्षगान) शैली के नाम से जाना जाता है।

साहित्य

विजयनगर के शासक शिक्षा एवं ज्ञान के महान संरक्षक थे। इनका शासन संस्कृत साहित्य के लिए पुनर्जागरण काल था। इन्होंने द्रविड़ भाषाओं तमिल, तेलुगू, कन्नड़ एवं मलयालम के क्षेत्र में नव-शास्त्रीय द्वार खोले। यद्यपि तमिल को छोड़कर इन भाषाओं की सामग्री संस्कृत के मूल पाठों से ली गयी थी। ये साहित्य भक्ति आन्दोलन के माध्यम से सांस्कृतिक आदान-प्रदान के वाहक बने।

उत्तर भारत की तरह यहाँ भी संस्कृत समाज के कुछ वर्गों के लिए ज्ञान का माध्यम बना रहा। विजयनगर दरबार द्वारा ऐतिहासिक कथा एवं आत्मकथा लेखन को प्रोत्साहित किया गया। सायण के नेतृत्व में बड़ी संख्या में संस्कृत विद्वानों ने धार्मिक साहित्य की रचना की तथा चारों वेद एवं कुछ ब्राह्मणों और आरण्यकों पर टीकाएँ लिखी। हेमाद्रि ने धर्मशास्त्र पर टीका लिखी। हालांकि सामाजिक संस्थाओं की प्रगति में इन लेखकों का योगदान थोड़ा ही रहा।

विजयनगर के अधिकांश शासक अत्यंत शिक्षित थे एवं इनमें से कुछ ने साहित्यिक योगदान दिये। कृष्णदेव राय संस्कृत एवं तेलगु का विद्वान था। इसने बड़ी संख्या में विद्वानों को संरक्षण दिया। कहा जाता है कि इसने संस्कृत में पाँच एवं 'आमुक्तमाल्यद ' के नाम से तेलुगु में एक रचना की। संस्कृत में लिखी उनकी एक महत्वपूर्ण रचना 'जाम्बवतीकल्याणम्' है।

कहा जाता है कि कृष्णदेव राय का दरबार तेलुगु के आठ महान कवियों से सुशोभित था, जिन्हें 'अष्टदिग्गज' कहा जाता थ। इनमें पेद्दन सर्वाधिक प्रसिद्ध था जिसने 'मनु चरित' एवं 'स्वारोचित संभव' की रचना की। तिम्मन ने 'परिजातपरहण', तेनाली रामकृष्ण ने 'पाण्डुरंग महात्मय' की रचना की। इन सभी ने तेलुगु काव्य को एक नयी दिशा दी। पेद्दन को 'आधुनिक तेलुगु का जनक' कहा जाता है। तिम्मन द्वारा लिखित प्रेम कथानक लम्बे समय तक लोगों के मस्तिष्क में ताजा बना रहा।

इस समय संस्कृत साहित्य एवं अन्य धर्मनिरपेक्ष साहित्य का तेलुगु में अनुवाद कार्य भी बड़े पैमाने पर हुआ। इसे कृष्णदेव राय ने प्रोत्साहित किया। विजयनगर के विद्वानों का सबसे बड़ा योगदान तेलुगु में एक प्रकार के नये काव्य 'प्रबंध' के लिए मार्ग प्रशस्त करने में रहा।

कुछ लेखकों ने 'यक्षगान' की शुरूआत की जो एक प्रकार का देशी नाटक था। जयदेव के 'गीत गोविन्द' पर राजा तिरूमल ने टीका लिखी।

विजयनगर साम्राज्य का शासन काल कन्नड़ एवं मलयालम के विकास का काल भी था। इस अवधि के प्रथम कन्नड़ विद्वान मधुरा ने 'धार्मनाथपुरन' की रचना की। मलयालम का प्रथम प्रामाणिक साहित्यिक कार्य 'उन्नुनेली संदेशम्' इसी समय सामने आया, जो कालिदास के मेघदूतम् पर आधारित है। इसी काल में माधव पनिकर ने 'भागवद गीता' का मलयालम में अनुवाद किया।

अंत में कहा जा सकता है कि तत्कालीन समृद्ध राजकीय काल ने साहित्य में नव क्लासिकी परंपराओं एवं रोमांटिक अभिव्यक्ति के लिए उत्साह का निर्माण किया। कवियों का यह उत्साह एवं विद्वता काव्य के नये रूपों 'प्रबंध', 'द्विअर्थी' एवं 'यक्षगान' के रूप में सामने आया। प्रेम, भक्ति, दर्शन एवं उपदेशात्मक तत्वों का संतुलन काव्य में बना रहा। इस समय सौंदर्यबोध अन्य तत्वों से कहीं बढ़कर कवियों का प्रमुख वर्ण्य-विषय एवं उद्देश्य था।

प्रश्न : साहित्य एवं कला के क्षेत्र में कृष्णदेव राय के योगदान पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : कृष्णदेव राय भारत के उन महान शासकों में शमिल हैं, जिन्होंने न केवल प्रशासन को सुदृढ़ आधार दिया, वरन साहित्य एवं कला के क्षेत्र में भी अनुपम योगदान दिया। अपनी रचनात्मक प्रतिभा में कृष्णदेव राय अकबर के निकट आ जाते हैं। वस्तुतः दक्षिण के राज्यों के साथ निरंतर संघर्ष में उलझे रहने के बावजूद भी कृष्णदेव राय ने अपनी रचनात्मक प्रतिभा को फलने-फूलने का अवसर दिया। उनके काल में विजयनगर दरबार विद्वानों एवं कलाकारों का बड़ा संरक्षक बना।

विजयनगर शासक संस्कृत के बड़े संरक्षक रहे थे। कृष्णदेव राय से पूर्व ही विजयनगर दरबार में चारों वेदों पर टीकाएं लिखवाई गयी थीं। कृष्णदेव राय के अंतर्गत यह परंपरा जारी रही। कृष्णदेव राय तेलुगु के साथ-साथ संस्कृत के भी बड़े विद्वान थे। तेलुगु में उन्होंने 'आमुक्तमाल्यदा' नामक रचना लिखी। यह राजनीति एवं प्रशासन पर एक ग्रंथ है। इसी ग्रंथ से हमें यह सूचना मिलती है कि कृष्णदेव राय ने संस्कृत में ही 5 कृतियां लिखी थीं। फिर कृष्णदेव राय के दरबार में एक विद्वान तेनालीराम रहता था, उसने पाण्डुरंग महात्म्य नामक कृति

लिखी।

कृष्णदेव राय ने संस्कृत के साथ-साथ तेलुगु, तमिल तथा कन्नड़ भाषा-साहित्य को भी संरक्षण दिया, परंतु उनके काल में सबसे अधिक प्रगति तेलुगु भाषा-साहित्य को मिली। उनका काल तेलुगु भाषा-साहित्य के पुनर्जागरण का काल माना जाता है। उसके दरबार में तेलुगु के 8 विद्वान (अष्टदिग्गज) रहते थे। इनमें प्रमुख विद्वान पेद्दन था। पेद्दन ने एक प्रमुख कृति स्वारोचित संभव लिखी। एक दूसरा विद्वान नंदितिम्मन था। उसने 'परिजातापहरण' नामक ग्रंथ की रचना की।

उनके काल में साहित्य के साथ-साथ कला का भी व्यापक विकास देखने को मिलता है। कृष्णदेव राय के अंतर्गत स्थापत्य की द्रविड़ शैली को और भी परिपक्वता मिली। उनके द्वारा निर्मित हजारा मंदिर और बिट्ठल स्वामी मंदिर उत्कृष्ट स्थापत्य के उदाहरण हैं। इस काल में द्रविड़ शैली के अंतर्गत कुछ अन्य विशेषताओं का भी विकास देखा गया। वैसे तो गोपुरम का निर्माण पहले ही आरंभ हो गया था, परंतु इस काल में कुछ बेहतर किस्म के गोपुरम बने। इसके अतिरिक्त स्तंभों को अत्यधिक अलंकृत बनाया जाने लगा। एक ही पत्थर से स्तंभ एवं पशु आकृति दोनों का उत्कीर्णन अलौकिक जानवर की मूर्ति स्थापत्य को विशिष्ट बना देता है। साथ ही मंडप के अतिरिक्त कल्याण मंडप का निर्माण होने लगा। इसमें देवी ओर देवता का विवाह कराया जाता था।

विजयनगर के अंतर्गत चित्रकला की एक पृथक शैली विकसित हुई, जिसे 'लिपाक्षी चित्रकला' के नाम से जाना जाता है। इसमें विषय-वस्तु, रामायण एवं महाभारत से ली जाती थी। उसी प्रकार नृत्य एवं संगीत को मिलाकर एक पृथक शैली का विकास हुआ, जिसे 'यक्षिणी शैली' का नाम दिया जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि राजनीतिक क्षेत्र में विजयनगर साम्राज्य का गौरव महज 200 वर्षों तक रहा, परंतु उसकी सांस्कृतिक उपलब्धि भारतीय संस्कृत की धरोहर बन गई है।

प्रश्न : फिरोजशाह बहमनी और महमूद गवाँ के शिक्षा के क्षेत्र में योगदान का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर : फिरोजशाह बहमनी और महमूद गवाँ दोनों बहमनी राज्य के योग्य प्रशासक थे। इन दोनों ने राजनीतिक और प्रशासनिक दृष्टि से तो बहमनी राज्य को मजबूत बनाया ही शिक्षा के क्षेत्र में भी उन्होंने अमूल्य योगदान दिया।

फिरोजशाह बहमनी बहमनी वंश के सर्वाधिक प्रसिद्ध विद्वान सुल्तानों में से एक था। वह विद्या एवं ज्ञान की विभिन्न शाखाओं तथा अनेक भाषाओं में पारंगत था। वह धार्मिक ज्ञान से अर्थात् कुरान की टीकाओं, इस्लामी कानून आदि से अच्छी तरह परिचित था और वनस्पति शास्त्र, ज्यामिति, तर्कशास्त्र आदि विषयों में भी काफी रुचि रखता था। उसे फारसी, अरबी और तुर्की में ही नहीं, बल्कि तेलुगु, कन्नड़ और मराठी भाषाओं का अच्छा ज्ञान था। वह स्वयं भी एक अच्छा आशु कवि था। शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में व्यक्तिगत रूचि के परिणामस्वरुप फिरोजशाह बहमनी ने राज्य में शिक्षा के विकास को विशेष प्रोत्साहन दिया। शिक्षा के विकास हेतु उसने विदेशों से अनेक प्रसिद्ध विद्वानों को दक्षिण में आकर बसने के लिए प्रोत्साहित किया। इतना ही नहीं उसने खगोलिकी ज्ञान को प्रोत्साहन देने हेतु दौलताबाद में एक वेधशाला बनवाई। इसी प्रकार उसने स्थानीय स्तर पर शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु मदरसों की स्थापना करवायी।

फिरोज बहमनी के पश्चात् महमूद गवाँ ने उसकी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए शिक्षा के विकास हेतु कई कदम उठाए। महमूद गवाँ भी फिरोज बहमनी की तरह एक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक सुरुचि संपन्न व्यक्ति था। उसने अपने दरबार में अनेक विद्वानों को संरक्षण दिया। इन विद्वानों ने राज्य में शैक्षणिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने में महती भूमिका निभाई। महमूद गवाँ ने प्राथमिक स्तर की शिक्षा के लिए जहाँ मदरसों की स्थापना करवायी, वहीं उसने उच्च शिक्षा हेतु बीदर में एक महाविद्यालय की भी स्थापना करवायी। इतना ही नहीं, महमूद गवाँ ने अध्यापकों और छात्रों के रहने के लिए एक तीन मंजिला इमारत बनवाई जिसमें एक हजार छात्र और अध्यापक रह सकते थे। राज्य की ओर से अध्यापक और छात्र दोनों को मुफ्त भोजन और वस्त्र दिए जाते थे। शिक्षा के विकास में राज्य के सहयोग के कारण उस समय के कुछ प्रसिद्ध ईरानी एवं इराकी विद्वान महमूद गवाँ द्वारा निर्मित मदरसों में शिक्षा देने आए।

इस प्रकार हम देखते हैं कि बहमनी राज्य के अंतर्गत शिक्षा के विकास हेतु फिरोजशाह बहमनी और महमूद गवाँ के द्वारा सराहनीय प्रयास किया गया, किंतु आगे के शासक इस परंपरा को बनाए रखने में सक्षम नहीं रहे। इसका कारण था अमीरों की आपसी टकराहट के कारण साम्राज्य की एकता पर ज्यादा ध्यान केंद्रित करना, न कि सांस्कृतिक गतिविधियों पर।

बीजापुर का सुल्तान इब्राहिम आदिलशाह द्वितीय (1580-1627 ई.)

इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय मध्य कालीन भारत के इतिहास में एक विलक्षण शासक ठहरता है। उसने कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया तथा धार्मिक सद्भाव की नीति की एक मिशाल कायम कर दी।

1. उसने अद्भुत नक्काशी से युक्त कुछ महत्वपूर्ण स्थापत्यों का निर्माण करवाया; यथा-आनंदमहल, मिहत्तर महल तथा इब्राहिम रोजा के नाम से स्थापत्यों का समूह।

2. वह संगीत का एक महान पारखी था तथा उसने संगीत में अद्भुत विशेषज्ञता हासिल की थी, उसने संगीत पर एक दुर्लभ ग्रंथ 'किताब-ए-नौरस' की रचना की।
3. उसने धार्मिक सद्भाव की नीति को प्रोत्साहन दिया। वह स्वयं विद्या एवं ज्ञान की देवी सरस्वती का उपासक था जबकि इस्लाम में मूर्तिपूजा वर्जित है। उसने प्रशासन में बड़ी संख्या में मराठी हिंदुओं की नियुक्ति की।
4. इब्राहिम द्वितीय का दरबार न केवल समन्वित भारतीय संस्कृति, बल्कि वैश्विक संस्कृति को भी अभिव्यक्त करता था। उसके दरबार में बड़ी संख्या में मुस्लिम विश्व से साहित्यकार, कलाकार एवं विद्वान आते रहे तथा उन्हें संरक्षण मिला। इसलिए कुछ विद्वानों का यह मानना है कि वर्तमान में वैश्विक संस्कृति को प्रोत्साहन देने में जो भूमिका यूनेस्को निभा रहा है, वही भूमिका मध्यकाल में इब्राहिम द्वितीय का दरबार निभा रहा था।

■■■

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR